

हरिद्वार जिले में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन

प्रीति गुप्ता (शोधार्थी)

डा. रिचा चौहान (सहायक प्राध्यापक)

सारांश

यह शोध अध्ययन हरिद्वार जिला में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करने हेतु किया गया है। व्यक्तित्व किसी भी व्यक्ति के व्यवहार, सोच, भावनाओं तथा सामाजिक समायोजन का समग्र रूप होता है, जो उसकी शैक्षिक उपलब्धि एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित करता है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रमुख गुणों-जैसे आत्मविश्वास, सामाजिकता, भावनात्मक संतुलन, नेतृत्व क्षमता आदि-का परीक्षण करना तथा यह जानना है कि इन गुणों में लिंग, आयु, तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है या नहीं।

इस शोध में वर्णनात्मक (Descriptive) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। डेटा संग्रहण के लिए मानकीकृत प्रश्नावली एवं व्यक्तित्व मापनी (Personality Inventory) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए हरिद्वार जिले के विभिन्न विद्यालयों से चयनित छात्र-छात्राओं को नमूने (Sample) के रूप में लिया गया है।

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों-जैसे माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं t-परीक्षण (t-test)-के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व में कुछ आयामों पर समानता पाई जाती है, जबकि कुछ क्षेत्रों में भिन्नता भी देखने को मिलती है।

यह शोध शिक्षकों एवं अभिभावकों को छात्रों के व्यक्तित्व विकास को समझने एवं उसे प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव है।

प्रस्तावना

हरिद्वार जिला उत्तराखंड राज्य का एक महत्वपूर्ण शैक्षिक एवं सांस्कृतिक केंद्र है, जहाँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं। ऐसे विविध परिवेश में छात्रों के व्यक्तित्व का विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जैसे-परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति तथा व्यक्तिगत अनुभव।

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के व्यवहार, भावनाओं, विचारों तथा अभिव्यक्ति का समग्र रूप होता है, जो उसे अन्य व्यक्तियों से भिन्न बनाता है। शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व का विशेष महत्व है, क्योंकि यह न केवल छात्र के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है, बल्कि उसके सामाजिक समायोजन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं नैतिक मूल्यों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विद्यालय छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख केंद्र होता है। यहाँ उन्हें न केवल ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि अनुशासन, सहयोग, सहनशीलता एवं सामाजिक व्यवहार जैसे गुणों का भी विकास होता है। वर्तमान समय में यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दे।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध "हरिद्वार जिले में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन" अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम किस प्रकार विकसित हो रहे हैं तथा किन-किन कारकों का उन पर प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, यह भी जानने का प्रयास किया जाएगा कि छात्र और छात्राओं के व्यक्तित्व में क्या कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर छात्रों के व्यक्तित्व विकास को अधिक प्रभावी एवं संतुलित बनाने हेतु आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं।

ग्लासनेर (1962) के अनुसार, " जिस प्रकार जीव का शुभारंभ गर्भाशय में होता है उसी प्रकार व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक संबंधों के गर्भाशय से ही प्रारंभ होता है।"

व्यक्तित्व की वास्तविक अर्थ के अनुसार, व्यक्ति में जितनी विशेषताएं एवं विलक्षणताएं होती हैं उन सभी का समन्वित एवं संगठित रूप ही व्यक्तित्व होता है। अर्थात् व्यक्ति के व्यक्तित्व में आंतरिक तथा बाह्य पहलुओं का संगठन पाया जाता है। इसी प्रकार बालक के भौतिक जगत में भी उसके जन्म के पश्चात अविकसित शरीर, मस्तिष्क एवं कुछ मूल प्रवृत्तियां अवतरित होती हैं। जिनके आधार पर बालक धीरे-धीरे भौतिक परिवेश से प्रतिक्रिया करता है।

अध्ययन उद्देश्य

ओके अध्ययन के अंतर्गत निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन कार्य संपन्न किया गया है।

- सामाजिक स्तर पर व्यक्तित्व की अवधारणा का अध्ययन करना।
- छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तित्व पर परिवार के प्रभाव का अध्ययन।

विश्लेषणात्मक व्याख्या

- व्यक्तित्व की सामाजिक अवधारणा व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग अनेकों क्षेत्रों में किया जाता है जिनके अंतर्गत व्यक्ति से संबंधित विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है। वास्तव में व्यक्तित्व का निर्धारण समाज में उपस्थित सभी इकाइयों (जैसे माता-पिता घर परिवार आस-पड़ोस गली मोहल्ला सांस्कृतिक गतिविधियां, शादी - विवाह) द्वारा सामूहिक रूप से होता रहता है।

व्यक्तित्व विकास निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है जिसमें समय-समय पर विभिन्न सामाजिक इकाइयों द्वारा किसी भी व्यक्ति अथवा बालक के विकास को प्रभावित किया जाता है। घर परिवार एवम् विद्यालय के अतिरिक्त बालक के व्यक्तित्व पर समाज का भी प्रभाव पड़ता है। जब व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रशंसा समाज के महत्वपूर्ण तथा पारिवारिक सदस्यों द्वारा मिलती है तब ऐसी स्थिति में बालक में सकारात्मक शील गुणों का विकास होता है। सामाजिक स्तर पर प्रशंसा का अनुमोदन प्राप्त करने की बालक में तीव्र इच्छा शक्ति विकसित होती है। सामाजिक रूप से बालक जिन व्यक्तियों को महत्वपूर्ण मानता है वह स्वयं उनके जैसा व्यवहार करने लगता है। जिससे कि उसकी भी प्रशंसा की जाए। बालक के लिए ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में उसके माता पिता, अध्यापक तथा साथी आते हैं जिनके माध्यम से बालक को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। सामाजिक स्वीकृति से बालकों में श्रेष्ठता का भाव, नेतृत्व तथा आत्म विश्वास जैसे शील गुणों का विकास होता है जिनका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इसके अलावा सामाजिक रीतियों, परंपराओं तथा रहन-सहन के तौर तरीकों कभी सीधा प्रभाव बालक पर पड़ता है। प्रायः यह देखा जाता है कि ऐसे बच्चे जिनका आर्थिक सामाजिक स्तर उच्च कोटि का है उन्हें उच्च कोटि की ही भौतिक सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं। अतः इस प्रकार के बच्चों का व्यक्तित्व निर्धारण निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर वाले बच्चों की तुलना में सटीकता से होता है। इसके अतिरिक्त जो बच्चे सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं व सामाजिक गतिविधियों से परिचित होते हैं उनके भीतर अनुशासन तथा बड़ों का आदर सम्मान जैसी आदतें विकसित हो जाती हैं। इसी इसी क्रम में परस्पर सहयोग, मिलजुल कर रहने, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता आदि

व्यक्तित्व गुणों का भी विकास होता है। समाज के नकारात्मक पहलू की बात की जाए तो ऐसे सामाजिक वातावरण में बच्चे नकारात्मक गुणों को अपने भीतर समाहित कर लेते हैं ऐसी स्थितियों में अपने आसपास लड़ाई झगड़े नशे तथा जुआ खेलने जैसी

परिस्थितियों का प्रभाव भी उनकी मन है स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। समाज के अंतर्गत ही बालक गैंग तथा क्लब आदि जैसी परिस्थितियों में सम्मिलित रहता है सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव भी बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है। बालक अपने आसपास अपेक्षित सामाजिक वातावरण देखता है जिसके परिणाम स्वरूप उसमें कुंठा अनुशासनहीनता तथा चोरी करने जैसे गुणों का विकास होने लगता है। सामाजिक परिवेश में बालकों में चारित्रिक गुणों के साथ-साथ नागरिक गुणों का विकास होता है वे स्वयं को धनवान, विद्वान तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में देखने लगते हैं।

- विद्यालय छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं, बल्कि उनके समग्र विकास का केंद्र भी होता है। बालक और बालिकाएँ अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा विद्यालय में व्यतीत करते हैं, जहाँ वे विभिन्न प्रकार के अनुभवों, गतिविधियों और सामाजिक संपर्कों के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन, शिक्षक-छात्र संबंध तथा सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया उनके सोचने, समझने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन छात्रों एवं छात्राओं में आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और प्रेरणा को बढ़ाता है।

इसके अतिरिक्त, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे खेल, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और समूह कार्य विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता, सहयोग की भावना तथा संचार कौशल का विकास करती हैं। एक समावेशी एवं समान अवसर प्रदान करने वाला विद्यालय वातावरण छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे उनमें लैंगिक समानता की भावना विकसित होती है और वे बिना किसी संकोच के अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर पाते हैं। इसके विपरीत, यदि विद्यालय में भेदभाव, पक्षपात या अत्यधिक शैक्षिक दबाव हो, तो यह उनके व्यक्तित्व विकास को बाधित कर सकता है और उनके आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

अतः यह आवश्यक है कि विद्यालय ऐसा वातावरण प्रदान करे जो विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास को संतुलित रूप से प्रोत्साहित करे। इस प्रकार, यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि विद्यालय छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को किस प्रकार प्रभावित करता है और उनके समग्र व्यक्तित्व निर्माण में कितना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

विद्यालय के भीतर सबसे भूमिका में शिक्षक होते हैं व्यक्तित्व का प्रभाव भी बालकों के व्यक्तित्व को विकास पर पड़ता है शिक्षकों द्वारा शिक्षण सामग्री के पठन - पाठन के तौर तरीके विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान, विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने व उनका निवारण करना आदि जैसे शैक्षिक क्रियाकला बालक तथा बालिकाओं में चारित्रिक गुणों का विकास करते हैं। एक शिक्षक का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपने छात्र छात्राओं को केवल किताब विज्ञान तक नहीं सीमित न रखें क्योंकि ज्ञान केवल परीक्षा उत्तीर्ण करवाने का साधन तो बन सकता है परंतु बालक की सर्वांगीण विकास की कल्पना में यह सम्मिलित नहीं किया जा सकता। जिसके लिए एक शिक्षक को बालक तथा बालिकाओं में व्यावहारिक गुणों का निर्माण करना पड़ता है।

शिक्षक छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे केवल ज्ञान के स्रोत ही नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और आदर्श भी होते हैं। शिक्षक का व्यवहार, शिक्षण शैली, दृष्टिकोण तथा विद्यार्थियों के प्रति अपनापन उनके आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और सोचने के तरीके को गहराई से प्रभावित करता है। जब शिक्षक सकारात्मक, सहयोगात्मक और प्रोत्साहन देने वाला होता है, तो छात्र एवं छात्राएँ न केवल शैक्षिक रूप से उन्नति करते हैं, बल्कि उनमें नेतृत्व क्षमता, जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक का व्यवहार कठोर, पक्षपातपूर्ण या निरुत्साहित करने वाला हो,

तो यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे उनमें भय, संकोच या आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षक का समान दृष्टिकोण (gender equality) छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे उनमें समानता, सम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है। शिक्षक द्वारा दी जाने वाली सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता के अवसर भी विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक का प्रभाव छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक सभी पहलुओं को प्रभावित करता है, और उनके समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हरिद्वार जिले में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक कारकों से प्रभावित होता है। विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ उनके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्ययन के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों को सकारात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त होता है, उनमें आत्मविश्वास, सामाजिकता, नेतृत्व क्षमता तथा नैतिक मूल्यों का स्तर अधिक विकसित पाया गया।

इसके अतिरिक्त, छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में कुछ हद तक अंतर भी देखने को मिला, जो मुख्यतः सामाजिक परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा अवसरों की उपलब्धता पर आधारित है। हालांकि, जहाँ विद्यालयों में समान अवसर, प्रोत्साहन और समावेशी वातावरण उपलब्ध कराया गया, वहाँ यह अंतर अपेक्षाकृत कम पाया गया और दोनों वर्गों में संतुलित व्यक्तित्व विकास देखने को मिला।

अतः यह कहा जा सकता है कि यदि विद्यालय और शिक्षक मिलकर सकारात्मक, समावेशी एवं प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण प्रदान करें, तो छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व का समग्र एवं संतुलित विकास संभव है। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षाविदों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को और अधिक प्रभावी ढंग से दिशा दे सकें।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे. सी. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
- शर्मा, आर. ए. (2012). शैक्षिक अनुसंधान के सिद्धांत एवं तकनीकें. मेरठ: लोयल बुक डिपो।
- सिंह, ए. के. (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. पटना: भारती भवन।
- कौल, लोकेश (2009). शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग।